क्या मृत्यु भोज अभिशाप है या वरदान

क्या मृत्यु भोज अभिशाप है या वरदान इस कथन पर गहनता से विचार करने पर ज्ञात होता है कि मृत्यु भोज एक सामाजिक कुरीति है जो वरदान तो कदापि हो नहीं सकती ,इसे समाज के लिए अभिशाप माना ही जाता है।

इस अभिशाप को खत्म करने के लिए कई संगठन और समाजिक कार्यकर्ता जन जागृति का काम कर रहे हैं। परंतु प्रायः देखा जाता है कि रजक समाज के अधिकांश लोग सुधरने का नाम ही नहीं ले रहे हैं। ऐसे न सुधरने वाले लोग ब्राह्मण वादी व्यवस्था के निरंतर शिकार हो रहे हैं और वे इस रूढ़िवादी व्यवस्था से प्रभावित होकर मृत्यु भोज को उचित ठहराते हुए यह तर्क देते हैं कि - मृत्यु के बाद तेरहवीं के दिन ब्राह्मणों को भोजन कराना उचित होता है। साथ ही यह भी मान्यता बताते हैं कि मृतक की आत्मा 13 दिनों तक अपने घर में रहती है और फिर यमलोक की यात्रा पर निकलती है इस लिए मृत्यु भोज आवश्यक है। वे दलील देते हैं कि ब्राह्मण के मुख में गया हुआ भोजन सीधा मृतक के मुंह में पहुंचता है। यह कैसी विडम्बना है? कि लोग आज के इस वैज्ञानिक युग में भी अंधविश्वासी हो रहे हैं। ऐसा लगता है कि इन लोगों के लिए मृत्यु भोज निश्चित ही वरदान है। ऐसे लोग किसी भी समाज सुधारक की बात नहीं मानते। ये अंधविश्वास में इतने तल्लीन हैं कि कर्जा लेकर भी मृत्यु भोज करते हैं। इनको कर्ज देने वाले भी समाज के सूदखोर लोग होते हैं।ये

सूदखोर और जिव्हा रसास्वादी लोग उस गरीब मृतक परिवार पर मृत्यु भोज करने के लिए ताने कस कर दबाव बनाते हैं और कहते हैं कि यदि तू मृत्यु भोज नहीं करेगा तो तेरा बाप या मां (जो भी हो)सदैव राख में पड़े रहेंगे इसलिए मृत्यु भोज कर के अपने ऊपर से इस भार को सदा - सदा के लिए उतार दे। यदि किसी गरीब व्यक्ति ने मृत्यु भोज नहीं किया तो कहते हैं कि तेरे पुरखे तो अभी तक राख में पडे हैं पहले उनको बाहर निकाल , जब हमसे बात करना। गांवों में तो लोग ऐसे गरीबों लोगों का हुक्का पानी तक बंद कर देते हैं। इस लिए मृत्यु भोज मानवता पर कलंक है।

मृत्यु भोज के ख़िलाफ़ यह वैज्ञानिक तर्क भी है कि - मृत्यु भोज खाने से शारीरिक और मानसिक ऊर्जा नष्ट हो जाती है कारण यह है कि एक ओर जहां मृतक परिवार और उसके,सगे संबंधी शोकाकुल स्थिति में रुदन कर रहे होते हैं वहीं दूसरी ओर जिव्हा रसास्वादी लोग जबरदस्ती अपनी जठराग्नि को उद्दीप्त कर जिव्हा से लार टपकाने का भरसक प्रयास करते हुए भोज के इंतजार में बैठ हुए होते हैं या कुछेक लोग भोज कर रहे होते हैं। ऐसी स्थिति में भोजन करना वैज्ञानिक दृष्टि से अमान्य है, इस प्रकार के भोजन से शारीरिक और मानसिक ऊर्जा प्राप्त होने के बजाय क्षय होती है।

मृत्यु भोज बंद करने के सुझाव:-

मृत्यु भोज की जगह गरीबों की मदद करनी चाहिए।

यह मदद गरीब बच्चों की शिक्षा के लिए धन की आवश्यकता को पूरा करके की जा सकती है।

* गरीब कन्याओं के विवाह करा कर की जा सकती है।*

*रजक समाज के नियोक्ताओं द्वारा रजक गरीब बेरोजगार युवाओं को प्राथमिकता के आधार पर रोजगार देकर मदद की जा सकती है।

*सामाजिक वैमनस्यता को दूर कर बुरे वक्त में आपसी भाईचारा बनाकर एक दूसरे की मदद की जानी चाहिए।

* यदि समाज के सम्पन्न लोग जो मृत्यु भोज करना ही चाहते हैं तो ऐसे लोग मृत्यु भोज के स्थान पर फरवरी माह में अपनी सुविधानुसार तिथि को संत गाडगे जी की जयंती और भंडारे का आयोजन करें साथ में यदि चाहें तो अपने मृतक या माता को भी श्रद्धांजलि अर्पित करें।

*किसी भी परिवार में परिवार के सदस्य की मृत्यु हो जाने के बाद घर के शुद्धिकरण हेतु हवन कर सकते हैं, जिसमें घर के सदस्य,बहन बेटियां और ससुराल पक्ष से एक- दो व्यक्ति सामिल हो सकते हैं।

मृत्यु भोज से जुड़े कुछ सरकारी प्रयास

मृत्युभोज पर पाबंदी लगाने के लिए राजस्थान सरकार ने 1960 में राजस्थान मृत्युभोज निवारण अधिनियम पारित किया था। इस कानून की धारा-3 में इस बात का प्रावधान है कि कोई भी व्यक्ति राज्य में मृत्युभोज का आयोजन नहीं करेगा और न ही उसमें शामिल होगा और न ही इसके लिए किसी पर दवाब डालेगा।

उसके बाद अन्य राज्य सरकारें भी मृत्यु भोज पर कानून बनाने के प्रयास करती रहती हैं परंतु वोट की राजनीति इन प्रयासों पर पानी फेर देती हैं।

*केन्द्र सरकार को भी चाहिए कि मृत्यु भोज पर प्रतिबंध हेतु सख्त कानून बनाए।

रजक समाज में सुधार की गति धीमी है। इसके उदाहरण के लिए प्रस्तुत हैं कुछ तथ्य।

पहले सभी जातियों में शादी तीन दिन में सम्पन्न होती थी।इसकी फिजूल खर्ची को देखते हुए सवर्ण जातियों ने इसे तीन से दो फिर एक दिन का कर दिया। अब यही शादी कुछ घंटों में तब्दील हो गई है।अभी भी निरंतर परिवर्तन की राह पर अग्रसर है।

दलित जातियों में और विशेषकर रजक जाति में यह परिवर्तन तो हुआ लेकिन मंद गति से। किसी भी सामाजिक परिवर्तन में जब

सवर्ण जातियां अपने चर्म पर पहुंचती हैं तब जाकर रजक समाज परिवर्तन के बारे में सोचता है।आज हम देखते हैं कि शादियों में जो परिवर्तन हुआ, उसमें भी हम पीछे रह गए। हमारा समाज पीछे देख कर आगे चलता है इसलिए ही हर क्षेत्र में पिछड़ जाता है। ऐसे अन्य बहुत कुप्रथाओं को परिवर्तित करने वाले सामाजिक परिवर्तन हैं।

निष्कर्ष स्वरूप हम कह सकते हैं कि मृत्यु भोज एक सामाजिक कुरीति ही नहीं अपितु कलंक है, वरदान कहना तो किसी भी दृष्टिकोण से उचित न होगा। आइए! इस कुरीति रूपी कलंक को हम सब मिलकर समूल नष्ट करने का प्रयास करें।

हरी सिंह खोवाल